www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

१४०

वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

अपव्यय रोकें-धन का सदुपयोग करें

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

DEV SANSKRITI VISWAVIDHYALAYA
HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्प्रवृत्ति संवर्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन

यदि दुष्प्रवृत्तियों का प्रतिरोध न किया जा सका तो उनकी दुष्टता अनुनय विनय से रुकने वाली नहीं है, जब तक कि इस वर्ग को यह विदित न हो जाए कि समाज अब अनाचारों का विरोध करने लगा है । मानव का गौरवशाली स्तर लाने के लिए दुष्प्रवृत्तियों के उन्मूलन के लिए प्रभावशाली और क्रियापरक उपायों को व्यवहार में लाने की तात्कालिक आवश्यकता अनुभव की जाने लगी है ।

दूरभाष : (०५६५) ४०४०१५/४०४०००

–लीलापत शर्मा
व्यवस्थापक
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा–३

मूल्य : १.५० रु०

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पैसे में रचनात्मक शक्ति है उसके द्वारा कितने ही उपयोगी कार्य हो सकते हैं और सदुद्देश्यों की पूर्ति में सहायता मिल सकती है । पर साथ ही यह भी न भूल जाना चाहिए कि उसकी मारक शक्ति उससे भी बढ़ी चढ़ी है ।

धन का महत्व तभी है जब वह नीतिपूर्वक कमाया गया हो और सदुद्देश्यों के लिए उचित मात्रा में खर्च किया गया हो । अनीति से कमाया तो जा सकता है, जिन लोगों के द्वारा वह कमाया गया है, जिनका शोषण या उत्पीड़न हुआ है, उनका विक्षोभ सारी मानव सभ्यता के लिए घातक परिणाम उत्पन्न करता है । शोषित एवं उत्पीड़ित व्यक्ति जब देखते हैं कि उन्हें ठगा या सताया गया है और जिसने सताया या ठगा है वह मौज कर रहा है तो उनका मन आस्तिकता एवं नैतिकता के प्रति विद्रोह भावना से भर जाता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह विक्षोभ धर्म और ईश्वर पर से विश्वास डिगा सकता है और उस स्थिति में पड़ा हुआ मनुष्य अपने ढंग से—अपने से छोटों के साथ दुर्व्यवहार आरंभ कर सकता है । इस प्रकार बुराई की बेल बढ़ती है और उसके विषैले फल संसार में अनेकों प्रकार के दुष्परिणाम पैदा करते हैं । इस प्रकार फली हुई दुष्प्रवृत्तियों का कोई परिणाम उस पर भी हो सकता है जिसने अनीतिपूर्वक किसी का शोषण किया था ।

बुराई से केवल बुराई बढ़ती है । धन यदि बुरे माध्यम से कमाया गया है तो उसका खर्च भी उचित रीति से नहीं हो सकता । जिसने पसीना बहाकर गाढ़ी कमाई से पैसा कमाया है, उसे खर्च करते समय दर्द लगेगा और बार बार सोचेगा कि इसे किस कार्य के लिए कितनी मात्रा में खर्च करना उचित है ?

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

किन्तु जिसने बिना परिश्रम, धूर्ततापूर्वक कमाया है उसके लिए निरर्थक कामों में बहुत कुछ खर्च कर डालना भी बुरा न लगेगा। सच बात तो यह है कि हराम की कमाई आडंबर बनाने, ढोंग रचने और विलासिता के प्रसाधन जमा करने में ही खर्च होती है। अनेकों व्यसन ऐसे लोगों के पीछे पड़ जाते हैं जिनमें वह धन तो बर्बाद होता ही है, साथ ही शरीर और मन को अस्त व्यस्त कर देने वाली अनेकों बुराइयां भी अपने भीतर पैदा हो जाती हैं जिनके कारण अनेकों विपत्तियों और व्यथाओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार वह अनुचित कमाई अपना क्षणिक चमत्कार दिखाकर अंततः मनुष्य के भविष्य को अंधकारमय बनाने वाली ही सिद्ध होती है।

धन कमाने के लिए उचित प्रयत्न करना

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सराहनीय है । उपार्जन और उत्पादन के लिए प्रयत्नशील रहने से व्यक्ति और समाज की क्षमता बढ़ती है । प्रगति पथ प्रशस्त करने वाले साधनों में एक महत्वपूर्ण वस्तु धन भी है । इस धन के उपार्जन का प्रयत्न करना बुराई की नहीं प्रशंसा की बात है । इससे राष्ट्र की आर्थिक क्षमता बढ़ती है और उससे भौतिक उन्नति की संभावना बढ़ती है । भौतिक उन्नति भी आध्यात्मिक उन्नति में सहायक होती है । दरिद्रता मनुष्य की कोमल भावनाओं और मानवोचित आकांक्षाओं को कुण्ठित ही करती रहती है । इसलिए दरिद्रता को सदा हेय ठहराया गया है । धन को लक्ष्मी मानकर उसकी पूजा करने की प्रथा से यह स्पष्ट है कि वह स्वागत योग्य है, घृणास्पद नहीं ।

धन की विधायक शक्ति सर्व विदित है इसलिए गृही, विरक्त सभी धन प्राप्ति की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आकांक्षा मन में धारण किए रहते हैं और उसके लिए अपने अपने ढंग से प्रयत्न भी करते रहते हैं । धन पाकर बाल वृद्ध सभी को प्रसन्नता होती है । यह उचित भी है, क्योंकि सभी श्रेणी के व्यक्ति अपनी अपनी सुख सुविधा के प्रसाधन धन द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं । विचारणीय प्रश्न इतना ही है कि वह धन अनीतिपूर्वक कमाया हुआ न हो । यदि वह अनुचित अन्यायोपार्जित होगा, बिना परिश्रम के अनायास ही प्राप्त कर लिया गया होगा तो वह कमाई किसी के लिए भी श्रेयस्कर न होगी । वरन् जिससे कमाया है उसे और जिसने कमाया है उसे शोक संताप देती हुई अंततः खेदजनक परिणाम प्रस्तुत करती हुई विनष्ट होगी ।

अनुचित मार्ग से आया हुआ धन मौज मजा करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करता है । उस

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मार्ग पर थोड़ा भी झुकाव होने से बड़ी से बड़ी पूंजी कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाती है । खर्च करने के अगणित साधन फैले पड़े हैं । उनमें कुछ ही समय में चाहे जितना पैसा उड़ाया जा सकता है । विलास प्रसाधनों में अपव्यय की आदत जिन्हें पड़ जाती है उन्हें वह भी एक आवश्यकता जैसी ही प्रतीत होने लगती है और फिर उस आदत को पूरा करने के लिए बहुत धन की आवश्यकता बनी रहती है । ऐसे लोग कर्ज लेकर दूसरों को धोखा देकर या जीवन को सुव्यवस्थित रखने वाली छोटी संचित पूंजी को नोंच नोंच कर अपनी उड़ाऊ आदत को पूरा करते हैं और धीरे धीरे अपराधी प्रवृत्तियां अपना कर ऐसे दुष्कर्म करने पर उतर आते हैं जिनका परिणाम सर्वनाश के अतिरिक्त कुछ और नहीं हो सकता ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आज मनुष्य का मूल्यांकन उसके धन से किया जाता है । किसी व्यक्ति का परिचय पूछने पर आम तौर से उसकी कमाई और संपत्ति का वर्णन करते हैं और उसी आधार पर किसी का छोटा या बड़ा होना माना जाता है । यह दृष्टिकोण गलत है । इस गलती का एक परिणाम यह भी होता है कि लोग किसी भी प्रकार धनी बनना चाहते हैं और उसके अनुचित तरीके अपनाने में भी नहीं हिचकते । कितने ही व्यक्ति जो वस्तुतः धनी नहीं हैं, दूसरों की आंखों में धनी प्रतीत होने के लिए आडंबर बनाते हैं और उन खर्चीले आडंबरों में बेचारों की आर्थिक कमर टूट जाती है । भेद खुलने पर उपहास होता है सो अलग।

कंजूसी अपने ढंग की दुष्प्रवृत्ति है । पैसे को रोककर, दाव कर रखना उसके लाभ से समाज को वंचित करने के समान है । सड़क

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चलने के लिए है कोई व्यक्ति उसे रोककर बैठ जाए तो दूसरों को इससे असुविधा ही होगी। नदी में बहने वाला जल अनेकों का हित साधन करता है पर यदि कोई उस प्रवाह को रोक डाले तो उससे कहीं सूखा पड़ने और कहीं बाढ़ आने का खतरा रहेगा। इसी प्रकार रुका हुआ धन अनेकों की आजीविका का मार्ग बंद कर देता है और जहां रुकता है वहां बाढ़ जैसी बर्बादी उत्पन्न करता है। कंजूस उसे न अपने काम में लाता है और न दूसरों के काम में आने देता है। ऐसी दशा में वह संचय एक प्रकार का दुर्भाग्य एवं अभिशाप सिद्ध होता है। चोर–डाकुओं की उत्पत्ति का एक कारण कंजूसों का लालचीपन भी होता है। मधुमक्खी की तरह उन्हें अपनी कमाई दूसरों के हाथ गंवाने का ही पश्चात्ताप हाथ लगता है।

विद्वानों का कथन है कि मनुष्य की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रेष्ठता और निकृष्टता दो कसौटियों पर परखी जा सकती है और वे हैं–(१) धन, (२) नारी । इन दो के संबंध में जिनका दृष्टिकोण धर्म बुद्धि से संचालित होता है, जो इन दो प्रलोभनों के आगे ईमानदार बने रहते हैं वस्तुतः वे ही खरे आदमी हैं । जो परीक्षा की अग्नि में तपकर खरा सिद्ध हो सके उसी को प्रामाणिक माना जाता है । धर्मात्मा और सज्जन वही व्यक्ति कहा जा सकता है जिसने अनीति से उपार्जित, बिना परिश्रम का पैसा छुआ न हो । जिसे ईमानदारी की कमाई में ही संतोष है उसे संत कहा जा सकता है । जिसकी आंखें युवा नारी में अपनी वयस्क बहिन या पुत्री की छाया देखती हैं और नर नारी की आत्मा में जिसे अंतर नहीं दीखता उसी को ब्रह्मचारी या विरागी कह सकते हैं ।

धन का जहां जीवन के भौतिक विकास

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

में महत्त्वपूर्ण उपयोग है वहां आध्यात्मिक जीवन में भी एक भारी उपयोग है कि वह मनुष्य की वास्तविकता को परखकर रख देता है । लोभ को पाप का मूल माना गया है । अनीति की कमाई एवं अनुपयुक्तता अपव्यय किसी भी मनुष्य के घृणित एवं पतित होने का सबसे बड़ा प्रमाण ही हो सकता है, भले ही वह लोगों की आंखों को झुठलाने के लिए कितना ही बड़ा आडंबर ओढ़े क्यों न बैठा हो ? धर्मात्मा की प्रथम परीक्षा यह है कि वह परिश्रम की कमाई पर संतोष करे, एक एक पाई का सदुपयोग करे और जो बचे उसे लोकहित के लिए लगाता रहकर स्वयं अपरिग्रही बना रहे ।

पैसा जहां रुकता है वहां सड़ता है । उसकी बदबू चारों ओर फैलती है । कीचड़ या गंदी चीजों का ढेर लगने से उसमें सड़न पैदा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

होती है और उस गंदगी की दुर्गंध समीपवर्ती सब लोगों को दुख देती है । संग्रही व्यक्ति भले ही अमीर या पूंजीपति के नाम से पुकारे जाएं वस्तुतः वे समाज के सम्मुख एक बुरा उदाहरण ही प्रस्तुत करते हैं । उनकी नकल करने की घुड़दौड़ में कितने दुर्बल बुद्धि मनुष्य अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं और किसी प्रकार अमीर बनकर उन तथाकथित बड़े आदमियों जैसा ऐश्वर्य भोगना चाहते हैं । इस अवांछनीय घुड़दौड़ को जन्म देने वाले वे लोग हैं जो अपना व्यक्तिगत वैभव बढ़ाकर सर्व साधारण की आंखों में चकाचौंध पैदा करते हैं और जल्दी अमीर बनने या असीम सुख साधन भोगने की कामनाओं को भड़काते हैं । अमीरी का ठाट बाट प्रकारांतर से लोगों को यही सिखाता है कि उन्हें भी इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इस घुड़दौड़ में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शामिल हो जाना चाहिए । अविकसित लोग सही तरीके से उतना उपार्जन करने की स्थिति में नहीं होते, उन्हें उतना धैर्य भी नहीं होता । इस लिए आमतौर से धन और ऐश्वर्य की लालसा में निमग्न व्यक्तियों को अनीति का मार्ग ही अपनाना पड़ता है । आज यही घुड़दौड़ मची हुई है और हमारा नैतिक स्तर बुरी तरह गिरता हुआ चला जा रहा है ।

जो अधिक उपार्जन कर सकते हैं उनका उत्तरदायित्व है कि वे सामान्य सामाजिक स्तर से बढ़ चढ़कर आडंबर न बनावें, सादगी से रहें और उसी प्रकार से जीवनयापन करें जैसा कि उस देश के सामान्य नागरिकों को बिताना पड़ता है । थोड़ा अंतर रह सकता है, पर वह उतना ही होना चाहिए जितना हाथ की पांचों उंगलियों की लंबाई में थोड़ा सा अंतर रहता है । बहुत भारी राजा और रंक जैसा अंतर

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सामाजिक रहन सहन में रहना केवल विद्वेष की आग ही भड़का सकता है और अनाचार ही उत्पन्न हो सकता है ।

अधिक उपार्जन की क्षमता की सार्थकता एवं प्रशंसा इस बात में है कि उसका उपयोग अपने से पिछड़े हुए लोगों को ऊंचा उठाने में किया जाए । दान उन लोगों का एक नैतिक कर्तव्य है जो अपने आवश्यक खर्चों के अतिरिक्त कुछ अधिक कमा या बचा सकते हैं । अपरिग्रह एक धर्म कर्तव्य माना गया है । जितनी अनिवार्य आवश्यकता है उससे भी अधिक का संचय परिग्रह रूपी पाप की श्रेणी में गिना जाना चाहिए । किसे कितनी आवश्यकता है इसकी निर्णय उसे समाज की मध्यम श्रेणी के स्तर के आधार पर किया जाना चाहिए । अन्यथा कोई व्यक्ति विलासिता को भी अपनी ''आवश्यकता'' सिद्ध करने लगेगा ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आर्थिक उपार्जन की क्षमता का होना प्रशंसनीय है । पर उस प्रशंसा की सार्थकता तभी है जब वह व्यक्तिगत विलासिता बढ़ाने की अपेक्षा लोक कल्याण के काम आवे । धन को शक्ति का प्रतीक माना गया है, उसकी लक्ष्मी के रूप में पूजा भी की जाती है । वह मान्यताएं तभी सत्य मानी जा सकती हैं जब उसके उपार्जन एवं व्यय पर धर्म बुद्धि का समुचित नियंत्रण बना रहे । अनियंत्रित उपार्जन एवं खर्च दोनों ही पतन का कारण बनते हैं, उसके कारण व्यक्ति का नाश और समाज का पतन होता है । धन विधायक शक्ति अवश्य है पर उसकी विनाशक शक्ति और भी प्रचण्ड है । धन का अनियंत्रित उपयोग किसी भी समाज का सर्वनाश करने के लिए भयंकर संहारक अस्त्र सिद्ध हो सकता है ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अर्थोपार्जन के आध्यात्मिक प्रयोग :

कुछ लोगों की ऐसी मान्यता है कि धार्मिक व्यक्ति को धन से विमुख होना चाहिए । जहां तक आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति का प्रश्न है धन के प्रति अत्यधिक लगाव न रखना उचित भी है किंतु गृहस्थी की सुख सुविधाओं के लिए, धार्मिक प्रयोजनों की पूर्ति के लिए धन अत्यधिक आवश्यक है । धन के बिना न धर्म संभव है, न कर्तव्य पालन । इस दृष्टि से निर्धनता अभिशाप है । हमारे आध्यात्मिक जीवन में धन का उतना ही महत्व है जितना ईश्वर उपासना का । लक्ष्मी को परमात्मा का वामांग मानते हैं । इसलिए उपासना को तब पूर्ण समझना चाहिए जब लक्ष्मी-नारायण दोनों की प्रतिष्ठा हो । जहां लक्ष्मी नहीं वहां पर परमात्मा भी बेचैन रहता है । लक्ष्मी रहती है तो परमात्मा की प्राप्ति में

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुविधा मिलती है, हमारी मान्यता इस प्रकार की होनी चाहिए ।

आर्थिक दृष्टि से मनुष्य दूसरों का गुलाम बने यह न तो उपयुक्त ही है और न परमात्मा की ही ऐसी इच्छा है । उन्होंने अपने प्रत्येक पुत्र को समान साधन दिए हैं, समान क्षमताएं दी हैं तो उसका एक ही उद्देश्य रहा है कि आत्म कल्याण और जीवन यापन में प्रत्येक व्यक्ति आत्म निर्भर रहे । ईश्वर निष्ठ को निराश्रित होना उचित भी नहीं, अपनी आजीविका का प्रबंध उसे स्वयं करना चाहिए ।

निर्धनता एक प्रकार की आध्यात्मिक विकृति है धन न कमाना त्याग का लक्षण नहीं । यह मनुष्य में दैवी गुणों की कमी का परिचायक है । हर व्यक्ति को विशुद्ध धार्मिक भावना से अर्थोपार्जन करना चाहिए । यह

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

क्रिया आत्म विकास के अंतर्गत ही आती है । "पीस, पावर और प्लेन्टी" (शांति, शक्ति और समृद्धि) नामक पुस्तक के रचयिता श्री ओरिसन मार्डन ने लिखा है–"जो दरिद्री होते हैं उनमें न आत्म विश्वास होता है और न श्रद्धा । लोग अपनी स्थिति बदल सकते हैं पर उन्हें अपनी शक्तियों पर भरोसा करना आना चाहिए । आशा, साहस, उत्साह और कर्मशीलता के द्वारा कोई भी व्यक्ति श्री संपन्न बन सकता है ।"

धन को सुख का साधन बनाकर उसे ईमानदारी और परिश्रम के द्वारा कमाया जाए तो वह आत्म विकास में भी सहायक होता है । धन प्राप्ति का एक दोष भी है–अनावश्यक 'लोभ' । वित्तेषणा के कारण लोग अनुचित तरीकों से धन कमाना चाहते हैं । बेईमानी के द्वारा कमाया हुआ धन मनुष्य को व्यसनों की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ओर आकर्षित करता है । जुआ, सट्टा, लाटरी, नशा, वेश्यावृत्ति में धन का अपव्यय करने वाले प्रायः सभी अनुचित तरीकों से धनार्जन करते हैं । इस प्रकार की कमाई मनुष्य की दुर्गति करती है । इस प्रकार का धन हेय कहा गया है और उस धन से निर्धन होना अच्छा बताया गया है ।

मनुष्य किस प्रकार समृद्ध बने इसका आध्यात्मिक विवेचन शास्त्रकार ने स्वयं लक्ष्मी जी के मुखारविन्द से कराया है । वर्णन भले ही आलंकारिक हो पर उसमें जिन सिद्धांतों का समावेश हुआ है वे अटल हैं । उनकी उपेक्षा करने से कोई भी व्यक्ति न तो धनी हो सकता है और न उस धन से सुख, शांति और संतोष ही प्राप्त कर सकता है ।

एक साधक के प्रश्न का उत्तर देती हुई लक्ष्मी जी कहती हैं—

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वसामि नित्यं सुभगे प्रगल्भे दक्षे नरे कर्मणि वर्त्तमाने ।
अक्रोधने देवपरे कृतज्ञे जितेन्द्रिये नित्यमुदीर्ण सत्त्वे ॥

अर्थात्–मैं सुन्दर स्वभाव वाले, चतुर मधुर भाषी, कर्तव्यनिष्ठ, क्रोधहीन, भगवत्परायण, कृतज्ञ, जितेन्द्रिय और बलशाली लोगों के पास नित्य निवास करती हूं ।"

धन का कमाना, उसे बचाकर रखना और उससे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति उपर्युक्त गुणों पर आधारित है । उनमें से एक भी उपेक्षणीय नहीं । रोजगार करें या नौकरी, खेती करें या अन्य कोई रोजगार चतुरता, विनम्रता, कर्तव्य परायणता आदि सभी गुण चाहिए । बात बात पर झगड़ा करने, कर्तव्य की उपेक्षा करने या अपने सहयोगियों से मिलकर न रहने से न तो रोजगार पनप

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सकता है और न कोई अधिक समय तक नौकरी में ही रख सकता है ।

लक्ष्मी के दूसरे कृपापात्र परिश्रमी व्यक्ति होते हैं । जब कोई व्यक्ति उद्योग–धन्धा, व्यापार या परिश्रम त्याग देता है तो उसके पास की लक्ष्मी नाराज होकर लौट जाती है । "उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः" की कहावत प्रसिद्ध है । धनाभाव होना यह बताता है कि वह व्यक्ति परिश्रम नहीं कर रहा । उद्योगी और परिश्रमी व्यक्ति सदा समृद्ध देखे जाते हैं ।

परिश्रम और उद्योग करते हुए अनैतिक रास्तों का अनुकरण भी नहीं करना चाहिए अन्यथा ऐसे बखेड़े, झगड़े या आपत्तिपूर्ण अवसर आ जाएंगे जिससे बढ़ी हुई आय कुछ ही दिनों में नष्ट हो जाएगी । एक अन्य सूक्त में कहा है–

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्थिता पुण्यवतां गेहे सुनीति पथवेदिनाम् ।
गृहस्थानां नृपाणां वा पुत्रवत्पालयामि तान् ॥

अर्थात्–मैं नीति पर चलने वाले, पुण्य कर्म करने वाले गृहस्थों के घर बनी रहती हूं और उनका पुत्र के समान पालन करती हूं ।''

कुछ व्यक्तियों की ''जो मिला सो खर्च कर डाला'' की आदत होती है । वे धन को वासनाओं और व्यसनों की पूर्ति में बर्बाद करते हैं जो व्यक्ति केवल आज की चिंता करता है, कल की बात नहीं सोचता, इन्द्रिय सुखों और वासनात्मक तृप्ति के लिए आमदनी से अधिक कर्ज लेकर खर्च करता रहता है, धन उसके लिए अभिशाप बन जाता है । सजा के रूप में शारीरिक रोग, द्वेष, शत्रुता, व्यसन, पारिवारिक कलह, दुर्गुण, व्यभिचार, चिंताएं, बुरी आदतें, उद्दण्डता, अहंकार, तृष्णा आदि के शिकार बने रहते हैं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धन समृद्धि चाहने वालों के जीवन में आचरण उत्कृष्टता अनिवार्य है । उनका नैतिक एवं चारित्रिक जीवन जितना उदात्त होगा, वे उतनी ही तेजी से आर्थिक प्रगति करेंगे, किन्तु धन के साधक में व्यक्तिगत मैलापन भी नहीं होना चाहिए । कमल पवित्रता के साथ सौन्दर्य का भी प्रतीक है । सौन्दर्य का अर्थ मनुष्य का शारीरिक स्वास्थ्य और स्वच्छता है । लक्ष्मी के प्रिय पात्र बनने के लिए व्यक्तिगत आचरण, रहन सहन, खानपान में भी स्वच्छता, सरलता और सादगी होनी चाहिए । लक्ष्मी जी कहती हैं—

कुचैलिन दन्तमलोपधारिण वध्वाविन निष्ठुर भाषिणं च ।
सूर्योदये धास्तमिते शयान जहाति लक्ष्मीर्यदि शारङ्गपाणिः ॥

अर्थात्—गन्दे वस्त्र पहिनने वाले, दांतों की

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सफाई न करने वाले, निष्ठुर भाषण करने वाले, जो सूर्योदय के पूर्व उठे नहीं और सूर्यास्त के समय सोते हों ऐसे व्यक्ति चाहे वह भगवान ही क्यों न हों लक्ष्मी जी उन्हें छोड़ जाती हैं।"

लक्ष्मी जी के चित्र, आसन, हवन आदि आलंकारिक रूप में ऐसे ही आध्यात्मिक गुण पिरोए हुए हैं, जो इन रहस्यों को जानकर धन प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है उस पर लक्ष्मीजी अनुग्रह करती हैं और वह आर्थिक समृद्धि द्वारा अपने सुख और संतोष को बढ़ाता है। इस प्रकार नीतिपूर्वक श्रम और ईमानदारी से कमाया हुआ धन मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति में बड़ा सहायक होता है। इन नैतिक मूल्यों का कभी उल्लंघन न करे यह धन मनुष्य के बड़े काम का है। उससे मनुष्य की सर्वतोमुखी प्रगति होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खर्च करना भी सीखिए :

कहावत है–"धन कमाना सरल है, किंतु खर्च करना कठिन है ।" साधारण अर्थ में तो यह कहावत हास्यास्पद मालूम पड़ती है । कोई भी कह उठेगा–"खर्च करने में क्या है, लाओ चाहे जितना पैसा दे दो, मैं कुछ ही समय में खर्च कर दूंगा, कमाना ही कठिन है ।" लेकिन बात ऐसी नहीं है, यह कहावत अपने आप में अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण सूत्र है ।

हमारी आर्थिक समस्याओं के पीछे कमाने का इतना दोष नहीं है, जितना खर्च करने का । थोड़ा बहुत अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार कमाते तो सभी हैं । बहुत कम व्यक्ति ऐसे मिलेंगे जो, कुछ न कमाते हों । हमारी खर्च प्रणाली ही आर्थिक समस्याओं की जड़ में मुख्य होती है । हम नहीं जानते कि हमें किस तरह खर्च करना चाहिए । जहां

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

खर्च नहीं करना चाहिए वहां हम पानी की तरह पैसा बहाते हैं और जहां आवश्यकता पड़ती है, वहां हम रीते हो जाते हैं । या खर्च में कंजूसी बर्तते हैं । खर्च करने की इस दोषयुक्त प्रणाली के कारण ही हमारे सामने आर्थिक समस्याएं उठ खड़ी होती हैं । हम उपयुक्त आमदनी होते हुए भी सुखी नहीं हो पाते । खर्च की विषम व्यवस्था के कारण कम आमदनी से लेकर अधिक आमदनी वालों को भी पूछ लिया जाए, सभी खर्च न चलने की शिकायत करते मिलेंगे, चाहेंगे और आमदनी बढ़ जाए । लेकिन आमदनी बढ़ जाती है फिर भी हमारी शिकायत बंद नहीं होती, वह बनी रहती है–''खर्च नहीं चलता ।''

इसमें कोई संदेह नहीं कि पर्याप्त धनोपार्जन करते हुए भी जो खर्च करने की विधि नहीं जानते वे अपनी आमदनी से सही

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्थों में सुखी नही हो पाते हैं ।

खर्च की प्रणाली में सबसे बड़ा दोष है– खर्चे का बजट अपनी आमदनी से अधिक रहना । जिस व्यक्ति का खर्च आय से अधिक होगा, उसका जीवन सुखी और संतुष्ट नहीं हो सकता । न वह ईमानदारी पर ही अधिक दिन तक टिक सकता है । क्योंकि फिर बढ़े हुए खर्चे की पूर्ति के लिए वह अनैतिक ढंग से कमाने के मार्ग अपनाएगा । अधिक धन कमाने से अधिक सुख नहीं मिलता वरन् ठीक ढंग से खर्च करने पर ही सुखी और संतुष्ट जीदन बिताया जा सकता है । जो व्यक्ति सौ रुपए कमाता है और खर्चा डेढ़ सौ का बना रखा है, वह अपनी आवश्यकताओं के लिए उधार कर्ज लेगा या बेईमानी से धन कमाएगा । दोनों ही रास्ते उसकी आंतरिक शांति के लिए गलत है । फिर कमाई से

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अधिक खर्च करने की आदत के कारण आय बढ़ाने के साथ साथ अधिक खर्च करने का स्वभाव सा बन जाता है और मनुष्य अपनी आर्थिक समस्याओं मे उलझा रहता है । चाणक्य ने कहा है–'अपार धनशाली कुबेर भी यदि अपनी आमदनी से अधिक खर्च करेगा तो एक दिन वह भी कंगाल हो जाएगा ।''

अपनी आमदनी को देखकर खर्च की व्यवस्था इस तरह करनी चाहिए कि आमदनी का कुछ अंश बचाया भी जा सके, जो कठिनाई पड़ने पर काम आवे । स्मरण रहे खर्च की नियमित व्यवस्था मर्यादा के लिए हमें किसी दूसरे का अनुकरण नहीं करना चाहिए । एक सौ रुपए कमाने वाला व्यक्ति तीन सौ रुपए कमाने वाले से खर्च की नकल न करे । वह अपनी आर्थिक स्थिति को देखे और उसी में से कुछ बचत रखकर खर्च करे ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कोई वस्तु इसलिए न खरीदे कि वह सस्ती है, क्योंकि सस्ती चीज अधिक मात्रा में खरीद लेने पर उसे खर्च करने की इच्छा भी बढ़ती है और अधिक खर्च हो जाता है । इससे वह अपने औसत मूल्य से भी मंहगी पड़ती है ।

अपव्यय की तरह ही खर्च करने में कंजूसी भी बहुत बड़ा दोष है । बहुत से लोग जीवन भर कमाते कमाते मर जाते हैं, किन्तु वे अपने या दूसरों के लिए आवश्यक खर्च भी नहीं करते । अपने बच्चों को योग्य बनाने में, उनकी शिक्षा दीक्षा में बहुत से लोग कंजूसी करते हैं । कई लोगों को पैसे से इतना मोह होता है कि वे हारी बीमारी में भी दवा दारू के लिए पैसा खर्च नहीं करते और मर तक जाते हैं । नजर कमजोर होती है लेकिन चश्मा नहीं लगाते और धीरे धीरे अंधे तक हो जाते हैं ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पैसा होते हुए भी बहुत से लोग खाने पीने, पहनने ओढ़ने, रहन सहन में इतनी कंजूसी करते हैं कि वे दरिद्र से लगते हैं । वे एक दिन मर जाते हैं और उनकी जीवन भर की संजोई हुई संपत्ति यों ही जमीन में गढ़ी रह जाती है या बच्चों के द्वारा फिजूलखर्ची में फूंक दी जाती है ।

मितव्ययता का मध्यम मार्ग ही खर्च करने की सही आधारशिला है । नियमित आवश्यकताओं की पूर्ति के निमित्त अपनी आमदनी को ध्यान में रखकर खर्च करना बुरा नहीं है । धन का खर्च करना न कहकर उसका सदुपयोग करना ही मितव्ययिता है । रोके रहने से धन की उपयोगिता, उर्वरक क्षमता ही नष्ट हो जाती है और फिजूलखर्ची से वह स्वयं ही नष्ट हो जाता है । चिर प्रवाहिनी नदी की धारा की तरह धन का संचय और

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सदुपयोग करते रहना चाहिए ।

मितव्ययता जहां अर्थ व्यवस्था के लिए एक उत्कृष्ट मार्ग है, वहां इससे मनुष्य में नैतिक सद्‌गुणों की भी वृद्धि होती है । अर्थ के माध्यम से रुपए पैसों के द्वारा तो इसकी साधना का अभ्यास किया जाता है । आर्थिक क्षेत्र में मितव्ययिता के अभ्यास से मनुष्य जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी अपनी विभिन्न शक्तियों का सदुपयोग करता है । यह ध्रुव सत्य है कि आर्थिक क्षेत्र में अपव्ययी स्वभाव वाला व्यक्ति आध्यात्मिक, नैतिक धार्मिक क्षेत्रों में भी संयमी और अपनी शक्तियों का सदुपयोग करने वाला रहे इसकी संभावना कम ही है ।

निर्धनता अभिशाप नहीं :

"मुझे यदि दूसरा जन्म मिला तो परमात्मा से कहूंगा मालिक ! तुम मुझे किसी

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कल कारखाने का मजदूर या खेत खलिहान का किसान बनाना । तूने मुझे निर्धन बनाया तो समझूंगा वरदान मिला धन का अभिशाप तो इसी जीवन में भोग रहा हूं ।'' उक्त शब्द संसार के प्रथम धनपति अमेरिका निवासी हेनरी फोर्ड ने अपनी डायरी में लिखे हैं । इसके कारणों पर प्रकाश डालते हुए उसने आगे लिखा है कि धन की अधिकता के कारण सारा जीवन अनियंत्रित वासनाओं और कामनाओं में बिताने के फलस्वरूप आज मेरी स्थिति ऐसी हो गई है कि विपुल संपत्ति होते हुए भी चाय और सिगरेट के अतिरिक्त और कुछ भी लेने के लिए डाक्टरों ने मना कर दिया है ।

योरोपियन लेखक विद्वान पीटर ने ''निर्धन का वकील'' नामक पुस्तक में बड़े ही मार्मिक शब्दों में लिखा है–''गरीब, गरीब न होते यदि

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धनवान ईमानदार होते और निर्धनों को अपनी वस्तुओं का उचित मूल्य चुका देते । धन का वैभव और कुछ नहीं केवल अनैतिक विजय भेंट है जो गरीबों का स्वत्व अपहरण करने से मिलती है ।''

अमेरिका के प्रेसीडेण्ट अब्राहम लिंकन ने अपने देशवासियों को संबोधित करते हुए अपनी सादगी का समर्थन इन शब्दों में किया था, ''गरीब लोग परमात्मा के अधिक सन्निकट होते हैं इसलिए मुझे वैभव पसन्द नहीं ।'' निर्धनता इसलिए श्रेष्ठ है कि वह व्यक्ति की अंतर्दृष्टि जागृत करती है । महान् दार्शनिक लूथर का कथन है—''हे परमात्मा मैं तेरा आभारी हूं, जो तूने मुझे निर्धन बनाने की कृपा की, ऐसा न करता तो तेरी उपस्थिति का मुझे ज्ञान मिलना दुर्लभ था ।

मुद्रक : युग निर्माण प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत्प्रवृत्ति संवर्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन

दुष्प्रवृत्तियां हमारे जीवन को कष्टमय और नारकीय बना देती हैं । इनसे हर व्यक्ति को बचाए रखने के लिए निम्न पुस्तकमाला घर-घर पहुचाने का प्रयास किया जाना चाहिए ।

१. आत्महत्या क्यों ?, २. मांसाहार, भोजन और स्वास्थ्य, ३. जनसंख्या वृद्धि रोकी जाए, ४. कामवासना में शरीर की ऊर्जा नष्ट न करें, ५. आधुनिक भौंड़े फैशन का परित्याग कीजिए, ६. अहंकार छोड़ें-विनम्र बनें, ७. निराशा को पास न फटकने दें, ८. अपव्यय रोकें-धन का सदुपयोग करें, ९. वेशभूषा की शालीनता, १०. क्रूरता पर टिका सौन्दर्य प्रसाधनों का संसार ।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १-५० रुपया

सभी आंदोलनों की पुस्तकों के लिए निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें ।

युग निर्माण योजना, मथुरा-३

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आत्मीय अनुरोध

इस पुस्तिका को अधिकाधिक व्यक्तियों तक पहुंचाने एवं पढ़ाने का प्रयास करें । इसे नववर्ष, दीपावली, होली आदि पर्वों तथा विवाह, जन्मदिन आदि मांगलिक अवसरों पर उपहार के रूप में देने के लिए अपने पास समुचित संख्या में मंगा कर रख लें । अन्य मंहगे व निरर्थक उपहारों की तुलना में यह छोटा-सा सस्ता उपहार लाख गुना महत्वपूर्ण एवं प्रेरणाप्रद सिद्ध होगा ।

अपने संबंधियों एवं संपर्क क्षेत्र के सभी व्यक्तियों को भी अधिकाधिक संख्या में यह पुस्तिका मंगाने के लिए प्रोत्साहित करें ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org